आरती श्रीमद्भगवद्गीता जी की (१)

करो आरती श्रीगीता जी की,
जग की तारन हार त्रिवेनी । स्वर्ग धाम की सुगम नसेनी ।।
अपरम्पार शक्ति की देनी । जय-जय हो सुदा पुनीत की ।।
ज्ञानदीप की दिव्य ज्योति । सकल जगत की तुम विभूति ।।
महानिशातीत प्रभा पूर्णिमा । प्रबल शक्ति भयभीत की ।।
अर्जुन की तुम सदा दुलारी । सखा कृष्ण की प्राण पियारी ।।
षोड़शकला पूर्ण विस्तारी । छाया नम्र विनीता की ।।
श्याम का हित करने वाली । मन का सब मैल हरने वाली ।।
सब उमंग नित भरने वाली । परम प्रेमिका कान्हा की ।।

विवरण

श्री गीता जी की हम आरती करते हैं । सम्पूर्ण जगत् को तारने वाली ये त्रिवेनी है तथा ये स्वर्ग धाम की सरल सीढ़ी है । ये अपरम्पार शक्ति को देनेवाली हैं ऐसे पुण्य देनेवाली गीता की सदा जय हो । ज्ञान को विकसित करने की दिव्य ज्योति है ये गीता तथा पूरे संसार की विभूति (ऐश्वर्य) है ।

महानिशा (घोर अन्धकार रात्रि) के बाद प्रभा पूर्णिमा (पूर्णमासी) भी यही लाती है, इनकी शक्ति बहुत ही बलशाली है । अर्जुन की ये बहुत ही निकट हैं एवं उनके सखा कृष्ण की ये गीता बहुत ही प्यारी है क्योंकि (सर्वप्रथम भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को ही गीता का उपदेश दिया था ।) सोरहों कलाओं से विस्तृत इस गीता की छाया पड़ते ही अर्थात् नित्य उसका पाठ करने से मनुष्य अत्यन्त कोमल हृदय वाला एवं विनीत हो जाता है ।

ये गीता सदा भगवान कृष्ण की हितकारी है, तथा सबके मन की मैल (दुर्विचार) हरने वाली है । सारे खुशी एवं आनन्द को देनेवाली ये गीता

श्रीकृष्ण की परम प्रेमिका भी है । ऐसे गीता जी की हम आरती करते हैं ।